Name of Scholar :**RAJESH KUMAR**
Name of Supervisor : **Dr. KRISHNA SWAMY DARA**
Department : Political Science Faculty of Social Sciences Jamia Millia Islamia New Delhi
Title : **"Dr. B. R. Ambedkar's Ideas On Coalition Politics: A Study of the BSP's Framework"**

शोध का सारांश (ABSTRACT)

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय-**''गठबंधन की राजनीति पर डॉ. अम्बेडकर के विचार: बसपा की रूपरेखा का एक अध्ययन'',** डॉ. अम्बेडकर मानते थे कि दलितों के उत्थान की पराकाष्ठा राजनैतिक सत्ता की प्राप्ति में ही निहित है। उनका यह दृढ़ मत था कि राजनैतिक चेतना वास्तव में समाज के हर वर्ग में होनी चाहिए जिससे इनका उत्थान होना सम्भव है। वस्तुत: दलितों के साथ होने वाले अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध यदि दलित सवर्ण वर्ग के प्रति आवाज नहीं उठाते तो असंतोष पैदा होने लगेगा। यह असंतोष आगे चलकर विद्रोह का रूप ग्रहण कर सकता है। यदि ऐसा होता है तो यह लोकतन्त्र के लिए अत्यधिक अहितकर होगा, परन्तु वह इस बात से भी परिचित थे कि दलित अपने बल पर सत्ता हासिल नहीं कर सकते। अत: उन्होंने दलितों के साथ अन्य पिछड़ी जातियों का गठबंधन बनाने का प्रयास किया। इसलिए उन्होने 25 अप्रैल 1948 को लखनऊ में अपने भाषण में दलित व अन्य पिछड़ी जातियों के बीच गठबंधन करके राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने की बात कही थी, क्योंकि यह वर्ग सत्ता से हमेशा अलग-थलग रहा है। इसका लाभ ब्राह्मणवादी विचारधारा वाले लोगों ने उठाया है। इसकी आबादी 80 प्रतिशत होने पर भी यह वर्ग सत्ता से अछूता रहा है। इसके साथ ही उन्होने समाजवादी पार्टी के नेता राम मनोहर लोहिया के साथ गठबंधन करने का प्रयास भी किया जिससे ब्राह्मणवादी विचारधारा से छुटकारा प्राप्त किया जा सके, परन्तु उनको इसमें कोई खास सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। उन्होंने जिन वर्गो के साथ गठबंधन बनाने की बात कही थी उनके अन्दर समता, स्वतन्त्रता और बन्धुता की भावना होनी चाहिये। ये तीनों शब्द गौतम बुद्ध की शिक्षाओं से लिये गये थे, इसके साथ ही इनका प्रयोग फ्रांस की क्रांति व अन्य जगहों पर भी हुआ था। प्राचीन काल में सबसे पहले बुद्ध ने इनको अपनाया आगे चलकर अम्बेडकर ने इनको अपना मूलमन्त्र बनाया।

अम्बेडकर ने अपने मिशन को तैयार करने के लिये तीन सिद्धान्तों का सहारा लिया जिनमें शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो, इन तीन सिद्धान्तों को अपनाकर उन्होंने अपना मिशन आगे बढ़ाया। जिससे उनकी वैचारिक क्रान्ति के प्रभाव के कारण उभरे दलित नेतृत्व ने जब दलितों के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक अधिकारों के आन्दोलन को आगे बढ़ाया तो ब्राह्मणवादी विचारधारा वाली पार्टियों ने सोशल इंजीनियरिंग के माध्यम से अम्बेडकर के आन्दोलन को आगे बढ़ाने वाली दलित पार्टियों के एजेण्डे को ही खत्म होने के कगार तक पहुँचा दिया, जिसमें विशेषकर रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आर.पी.आई.) का नाम लिया जाता है और इतना ही नहीं इन पार्टियों ने दलित नेताओं को भी छिन्न-भिन्न करके उनको प्रलोभन देकर अपनी पार्टी में मिला लिया जिसने पूरे दलित आन्दोलन को ही नष्ट कर दिया। उसके बाद भी सन् 1972 में उभरते दलित पैंथर्स की यही दशा हुई जिसके कारण दलित पैंथर्स के खण्ड-खण्ड हो गये जिसमें कुछ दलित चिन्तक अम्बेडकरवाद को ही अपनी विचारधारा का मूलमन्त्र मानते थे तो कुछ अम्बेडकरवाद तथा मार्क्सवाद के मिश्रण को पैंथर्स की विचारधारा का मूलमन्त्र बनाना चाहते थे, लेकिन यही विचारधारा आन्दोलन के बँटवारे का कारण बनी जिसके कारण यह आन्दोलन बिखर गया।

इसी अतीत से शिक्षा ग्रहण करके कांशीराम ने राजनीतिक दल स्थापित करने से पहले उन्होंने अपने सामाजिक व राजनीतिक आधार को मजबूत करने के लिये वामसेफ (Backward and Minority Communities Employees Federation) व डी.एस.-4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) की स्थापना की। उधर

रिपब्लिकन पार्टी के पतन के बाद आये राजनीतिक शून्य काल को बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की स्थापना ने पूरा कर दिया। कांशीराम ने अपने राजनीतिक आन्दोलन को तीन सिद्धान्तों में विभाजित करके देखा। पहला, उन्होंने आन्दोलन को जातिय सम्मान का नाम दिया। वही दूसरा भागीदारी, और तीसरा दलितों के वोटों को लूटने व बिकने से बचाना। कांशीराम के आन्दोलन ने उत्तर प्रदेश व अन्य स्थानों पर दलित वर्ग में एक नया जोश पैदा कर दिया। कांशीराम गांव-गांव में जाकर समझाते थे कि 15 प्रतिशत ब्राह्मणवादी विचारधारा के लोग 85 प्रतिशत दलितों पर सदियों से सत्ता जमाये बैठे है। इस वर्ग के अलग-थलग रहने व अपने अधिकारों के प्रति उदासीन होने का लाभ ब्राह्मणवादी विचारधारा के लोगों ने उठाया है। जिससे इन्होंने दलितों को केन्द्र में रखकर इसके इर्द-गिर्द पिछड़ी तथा अति पिछड़ी जातियों व अल्पसंख्यकों को जोड़ने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने राजनीतिक आधार को और मजबूत करने के लिये बाद में गठबंधन की राजनीति शुरु की जिसमें सबसे पहले समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ (4 दिसम्बर 1993) अल्पमत गठबंधन (Minority Coalition) करके अम्बेडकर की विचारधारा को आत्मसात् किया। परन्तु उसके बाद बसपा ने भाजपा के साथ मिलकर तीन बार (1995, 1997, 2002,) अल्पमत गठबंधन का सहारा लेकर सरकार बनाई और मायावती मुख्यमन्त्री बनी और बसपा ने अपनी विचारधारा बहुजन हिताय : बहुजन सुखाय को सर्वजन हिताय : सर्वजन सुखाय में बदल दिया। चौथी बार (13 मई 2007) ब्राह्मणों के साथ मिलकर उसने एक दलीय बहुमत सरकार (Single Party Majority Govt.) बनाकर सत्ता प्राप्त की और मायावती मुख्यमन्त्री बनी जिसके कारण बसपा पर अम्बेडकर की विचारधारा को पुन: परिभाषित करने के आरोप लगते रहे। बसपा का आज के युग में अम्बेडकर की विचारधारा पर चलना असम्भव प्रतीत होता है, क्योंकि दलित व अन्य पिछड़ी जातियाँ आज के युग में कुछ बसपा के साथ है तो कुछ अन्य पार्टियों में विभाजित दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में, बसपा को सत्ता प्राप्त करने के लिये, विकल्प की कमी के कारण अन्य वर्गों के साथ गठबंधन तो करना ही पड़ेगा, क्योंकि बसपा आधी अधूरी दलित व अन्य पिछड़ी जातियों के साथ सत्ता प्राप्त करने के लिये वह अपना पूर्ण बहुमत सिद्ध नहीं कर सकती। जिससे निष्कर्ष यह निकलता है कि बसपा को दलित उत्थान के लक्ष्य के मुद्दे को ध्यान में रखते हुये अम्बेडकर की विचारधारा को आत्मसात् करने के साथ-साथ पुन: परिभाषित भी किया है।

अनुसंधान के सुझाव

(1) बसपा को अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से दलित व अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों के साथ जुड़ना चाहिये, उनकी समस्याओं से अवगत रहकर उनके अन्दर एक नई भावना पैदा करनी चाहिये।

(2) बसपा को दलित व अन्य पिछड़े लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चुनावी मुद्दे बनाने चाहिये।

(3) बसपा को विरोधी दल की रणनीति को ध्यान में रखकर ही गठबंधन करना चाहिये, अन्यथा नहीं।

(4) वर्तमान संदर्भ में बसपा को अम्बेडकर के गठबंधन की विचारधारा को प्रासंगिक बनाने के लिये उसे अपनी रणनीति में पुनर्विचार करने के लिये उसे शोध के माध्यम से मंथन करना अति आवश्यक प्रतीत होता है।

गठबंधन बनाने के लिये बसपा किसी खास विचारधारा से प्रेरित नहीं है बल्कि शुरूआती स्तर पर बसपा की विचारधारा मात्र दलित सशक्तिकरण रही है। चूँकि यदि बसपा किसी भी तरीके से, किसी भी स्वरूप के गठबंधन से सत्ता पर काबिज हो जाती है तो इससे बसपा का जनाधार मजबूत होकर आधार ग्रहण करेगा जिससे दलितों का उत्थान होगा। आज बसपा ने दलितों के उत्थान को ध्यान में रखते हुए अन्य पार्टियों को दलितों के उत्थान के प्रति इतना मजबूर कर दिया है कि वे पार्टियाँ भी दलितों के उत्थान को ध्यान में रखकर ही कार्य करती हैं, यदि वे दलितों के उत्थान के प्रति उदासीन होती है तो उनको यह लगता है कि कहीं बसपा इसका लाभ न उठा ले। इसी कारण ये पार्टियाँ आज दलितों के उत्थान को ध्यान में रखकर कार्य कर रही है।